गिल्लू

महादेवी वर्मा

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है । उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था । तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघु प्राण की खोज है ।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा । कौन जाने, स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

अचानक एक दिन सबेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ-छुवौवल जैसा खेल खेल रहे थे । यह काकभुशुंड़ि भी विचित्र पक्षी है - एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के । उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है । इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही दे देना पड़ता है । दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं ।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई । निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो संभवत: घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे थे ।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघु प्राण के लिए बहुत थे । अत: वह निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था । सबने कहा कि कौए की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अत: इसे ऐसे ही रहने दिया जाए । परन्तु मन नहीं माना, उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आई, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन मरहम लगाया ।

रूई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर लुढ़क गईं ।

कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका । तीसरे दिन वह इतना आश्वस्त हो गया कि मेरी अँगुली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले काँच की मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर ताकने लगा ।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं ।

हमने उसकी ज़ातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे 'गिल्लू' कहकर पुकारने लगे । मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया ।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा । वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर जाने क्या देखता-समझता रहता था । परन्तु उसकी समझदारी और कार्य-कलाप पर सबको आश्चर्य होता था ।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरे ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला ।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता । उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती ।

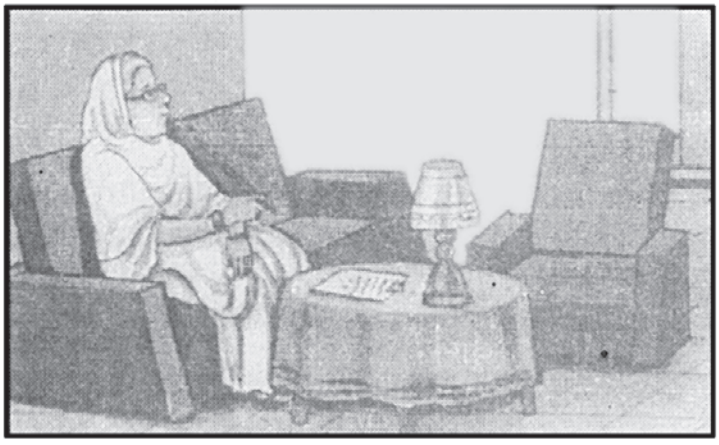

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बन्द रहता । इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरे कार्य-कलाप देखता रहता ।

भूख लगने पर चिक्-चिक् करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता ।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया । नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में धीरे-धीरे आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं ।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते हुए देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है ।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली । इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी ।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बन्द ही रहता है । मेरे कॉलिज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा । तब से यह नित्य का क्रम हो गया ।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह चला जाता और दिनभर गिलहरियों के झुंड़ का नेता बन , हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता ।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता । बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता । काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था ।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा । उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता । सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात हुआ कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कम खाता रहा ।

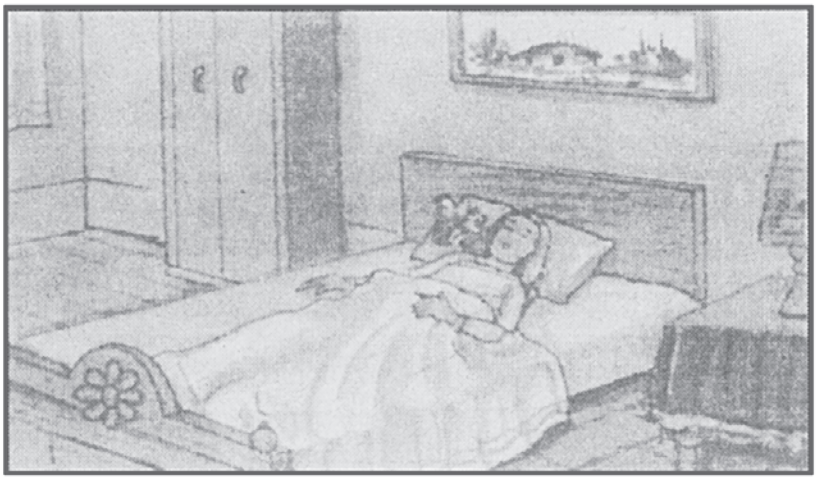

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान होता ।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू बाहर न जाता, न अपने झूले में बैठता । उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था । वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंड़क में भी रहता ।

गिलहरियों के जीवन की अविध दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अत: गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया । दिन भर उसने न कुछ खाया, न ही बाहर गया । रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंड़े पंजे से मेरी वही अँगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था ।

पंजे इतने ठंड़े हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया । परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

उसका झूला उतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी है, परन्तु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक्-चिक् करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है ।

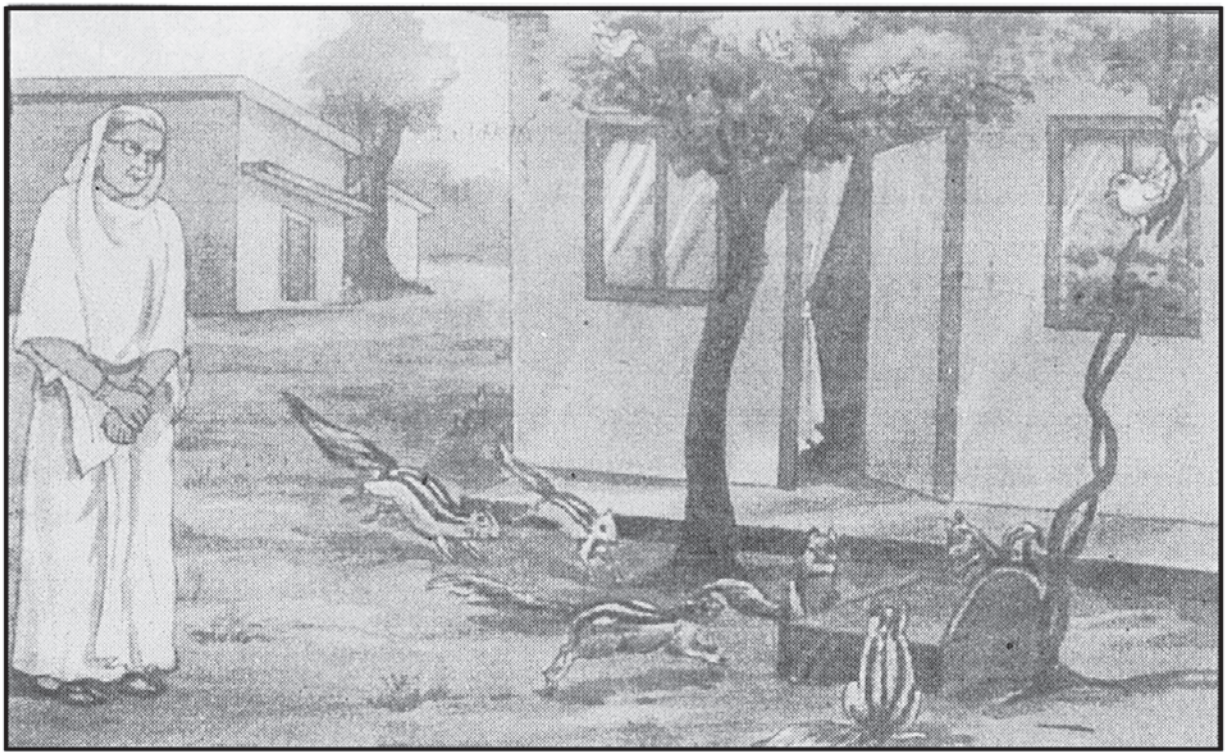

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है, इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी, इसलिए भी कि उस लघु गात का किसी बासंती दिन, जुही के पीलाभ छोटे-फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है ।

विचारबोध :- *गिलहरी जैसे जीवों की स्वच्छंद और आज़ाद प्रवृत्ति के कारण उन्हें पालतू बनाना आसान नहीं है । लेकिन मानवीय प्रेम और लगाव उन्हें मनुष्य के करीब ही नहीं, बल्कि साथी सहचर बना देते हैं । प्रस्तुत पाठ में पशु-पक्षियों के प्रति महादेवी वर्मा का सहज आकर्षण और प्रेम उजागर हो रहा है । उनकी गतिविधियों का सूक्ष्म अवलोकन, उनके साथ सद्व्यवहार और उन्हें स्वच्छंद एवं मुक्त रखकर उनके स्वाभाविक विकास की भावना को भी प्रोत्साहित किया गया है ।*

- शब्दार्थ -

सोनजुही - एकप्रकार का फूल । झब्बेदार - गुच्छा । कुतरना - छोटे छोटे टुकड़ों में काटना । अनायास - आसानी से । स्निग्ध - चिकने । विस्मित - आश्चर्यचकित । मनके - माला के दाने । कार्य-कलाप - क्रिया-कलाप, गतिविधि । तीव्र - तेज, बहुत अधिक । उपाय - तरकीब । गात - शरीर । अद्‌भुत - अनोखा । स्थिति-दशा । अपवाद - सामान्य नियम के बाहर । प्रिय - प्यारा, अच्छा लगना । आहत होना - चोट खाना । सिरहाने - सिर की ओर । हौले-हौले - धीरे-धीरे । परिचारिका - नर्स, सेविका, तीमारदारी करने वाली । सुलभ - सरलता से प्राप्त होने वाला । निश्चेष्ट - मृत, बिना हिले-डुले । रक्त - खून । उपचार - इलाज । उपरान्त - बाद में । अवमानित - अपमानित। समादरित - जिसका आदर किया गया हो । प्रभात - प्रात:काल । आश्वस्त - निश्चिंत । जीव - प्राणी । स्मरण - याद । लता - बेल । सघन - घनी/घना । हरितिमा - हरापन, हरियाली । लघु - छोटा । स्वर्णिम - सुनहरी । विचित्र - अनोखा । अनादरित - अपमानित । काक - कौवा । अवतीर्ण - उतरना, प्रकट होना । दूरस्थ - दूर के । कर्कश - कठोर । प्रयुक्त - प्रयोग । संधि - जोड़ । अवधि - समय । यातना - कष्ट । मरणासन्न - मरने जैसी स्थिति । उष्णता - गर्माहट । प्रयत्न - प्रयास, कोशिश । उत्पन्न होना - पैदा होना । लगाव - प्रेम । पीलाभ - पीली आभा ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) गिल्लू के व्यवहार, आदतों और क्रियाकलापों का वर्णन कीजिए ।

(ii) गिल्लू के किन-किन व्यवहारों से लगता था कि वह एक समझदार प्राणी है ?

(iii) सोनजुही की कली को देखकर लेखिका को किसकी याद आई और क्यों ?

(iv) इस संस्मरण के आधार पर महादेवी वर्मा के पशु-प्रेम पर प्रकाश डालिए ।

(v) गिल्लू एक संवेदनशील प्राणी है - सिद्ध कीजिए ।

2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है ?

(ii) लेखिका ने गिल्लू की जीवन-रक्षा कैसे की ?

(iii) लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

(iv) लेखिका ने गिल्लू को क्यों मुक्त कर देना चाहा और उसके लिए क्या उपाय किया ?

(v) अस्वस्थता के समय गिल्लू लेखिका के साथ कैसा व्यवहार करता था ?

(vi) गिल्लू की मौत कैसे हुई ?

(vii) सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?

3. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) गिल्लू को किसने घायल किया ?

(ii) गिल्लू के बालों और आँखों का वर्णन कीजिए ।

(iii) हमारे पूर्वपुरुष पितरपक्ष में क्या बनकर आते हैं ?

(iv) गिल्लू का नामकरण कैसे हुआ ?

(v) भूख लगने पर गिल्लू किस तरह संकेत देता था ?

(vi) लेखिका को अस्पताल में क्यों रहना पड़ा ?

(vii) गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था ?

(viii) लेखिका ने गिल्लू की समाधि कहाँ बनाई ?

(ix) लेखिका ने गिल्लू के घावों पर क्या लगाया ?

(x) लेखिका गिल्लू को किसमें बंद कर देती थी ?

(xi) गिल्लू बाहर कैसे आना-जाना करता था ?

(xii) गिल्लू ने गर्मी से बचने के लिए क्या उपाय खोज निकाला था ?

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(i) परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा । कौन जाने, स्वार्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

(ii) फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया । नीम चमेली की गंध मेरे कमरे में धीरे-धीरे आने लगी ।

(iii) प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

(iv) परन्तु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक्-चिक् करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है ।

भाषा ज्ञान

5. सही जोड़े बनाकर वाक्य पूरा कीजिए -

'क'	'ख'
(i) चार बजे वह खिड़की से आकर	प्रिय खाद्य था ।
(ii) भूख लगने पर गिल्लू	प्रथम बसन्त आ गया ।
(iii) काजू उसका	अपने झूले में झूलने लगा ।
(iv) फिर गिल्लू के जीवन का	हौले-हौले मेरे बालों को सहलाता ।
(v) वह तकिए पर सिरहाने बैठकर	चिक् चिक् करके सूचना देता ।

6. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द देखिए -

आँख- नैन, नेत्र, चक्षु

जल - पानी, नीर, वारि

आकाश - नभ, व्योम, गगन

और ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

बादल -

रात -

दिन -

पुष्प -

पेड़ -

7. प्रस्तुत पाठ से तीन शब्द छाँटकर उनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

8. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -

पास, लघु, समस्या, प्रिय, सुलभ ।

अभ्यास :

जिस अव्यय से दिशा या स्थिति का बोध होता है, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं ।

जैसे - इधर, उधर, जिधर, दूर, परे, दाहिने, बाँए, आरपार, बाहर, भीतर, ऊपर, अन्दर, आमने-सामने आदि ।

उदाहरण (१) वह नीले काँच की मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर ताकने लगा ।

ऐसे ही उपर्युक्त अव्यय शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

●